21

समूह प्रक्रम

मानव जीवन मुख्यतः विभिन्न प्रकार के समूहों पर निर्भर करता है। हम जन्म लेने के बाद विभिन्न लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए साथी मनुष्यों पर निर्भर रहते हैं। हम अधिक समय तक लोगों के साथ परस्पर क्रिया करते हैं। एक बच्चा एक परिवार में जन्म लेता है, स्कूल जाता है और मित्र बनाता है। एक प्रौढ़ व्यक्ति किसी संगठन में कार्य करता है, परिवार के सदस्यों की आवश्यकताओं की देखभाल करता है, और दूसरे लोगों के साथ विभिन्न क्रिया–कलापों में संलग्न रहता है। उसका विभिन्न प्रकार के लोगों के साथ कार्य करना बहुत कुछ समूह के प्रकार और उस परिस्थिति के संदर्भ में जिसमें वह कार्य करता है से निश्चित होता है। इस पाठ में आप समूह के स्वरूप, समूह निर्माण की प्रक्रिया और एक समूह का सदस्य होने के लाभ और हानि आदि के बारे में पढ़ेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप समर्थ होंगे :

- समूह के संप्रत्यय का वर्णन करने में,
- समूह में कार्य करने के ढंग को समझने में,
- समूह प्रक्रियाओं के स्वरूप को स्पष्ट करने में,
- समूह निर्माण में विभिन्न अवस्थाओं की चर्चा करने में,
- समूह के प्रकारों का वर्णन करने में,
- व्यक्ति के व्यवहार पर समूह के प्रभाव की चर्चा करने में।

21.1 समूह का स्वरूप

जब दो या अधिक लोग आपस में अन्तःक्रिया करते हैं हम कहते हैं कि समूह अस्तित्व में आ गया है। परस्पर अन्तःक्रिया करने और सामाजिक संबंध बनाने के बहुत से कारण हैं। उदाहरण के लिए विद्यार्थी कक्षा के बाहर अध्ययन में एक दूसरे के सहयोग हेतु परस्पर अन्तःक्रिया करते हैं। दूसरे परस्पर अन्तःक्रिया कर सकते हैं क्योंकि वे एक स्थान पर रहते हैं और उनका समान लक्ष्य होता है। वे साथ–साथ खेलना चाह सकते हैं और अपनी मैत्री की आवश्यकता पूरी कर सकते हैं। कुछ लोग अचानक मिलते हैं किंतु परस्पर अन्तःक्रिया करते रहते हैं क्योंकि उनको एक दूसरे का साथ संतोषजनक लगता है। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि प्रत्येक समूह एक लक्ष्य की प्राप्ति के लिए संघर्ष करता है। लक्ष्य जितना अधिक स्पष्ट होता है, समूह के सदस्यों में परस्पर अन्तःक्रिया और सहयोग उतना ही अधिक होता है। समूह के सदस्यों के मध्य संबंध कुछ समय (मास या वर्ष) के लिए स्थायी रहते हैं। समूह की एक रचना होती है और लोग सोचते हैं कि वे समूह का एक अंग है या उनमें अपनेपन की अनुभूति होती है।

भौतिक स्तर पर किसी उद्देश्य के लिए सामूहिकता को समूह कह सकते हैं। पाँचवी कक्षा के बच्चों का एक समूह होता है, बैंक अधिकारियों की एक समिति एक समूह है, एक ओर से बड़े लट्ठे को काटने वाले दो बढ़ई एक समूह का निर्माण करते हैं, फुटबाल खेलने वाली एक टीम भी समूह है आदि–आदि। इन सारे समूहों का अस्तित्व केवल भौतिक स्तर पर होता है और ये सीधा आमने–सामने की परस्पर अन्तःक्रिया करते हैं। इन समूहों में समूह के सदस्यों के मध्य सीधी और तुरंत बातचीत संभव होती है और ऐसा सामान्यतः होता रहता है।

वे लोग जिनमें कतिपय समान विशेषतायें होती हैं, वे सभी समूह बनाते हैं। उदाहरण के लिए एक कक्षा के सभी सिक्ख विद्यार्थी एक समूह कहे जा सकते हैं, एक छोटी कक्षा में सभी बायें हाथ से कार्य करने वाले विद्यार्थी एक दूसरा समुच्चय है, समुच्चय के सभी सदस्यों में कम से कम एक विशेषता समान है जो दूसरों में नहीं हो सकती। ऐसे समुच्चय के सदस्यों के मध्य कोई आमने–सामने बातचीत होना आवश्यक नहीं है। एक सदस्य दूसरे सदस्य को नहीं भी जानता हो सकता है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि एक समूह दो या अधिक व्यक्ति से बनता है जिनमें अंतःक्रिया होती है और लक्ष्य समान होते हैं। उनके संबंधों में स्थायित्व होता है, और एक दूसरे पर निर्भर करते हैं और अपने को उस सामूहिकता का अंग मानते हैं।

एक समूह की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता परस्पर निर्भरता है। यह व्यवहार परिणामों और कार्यों से संबंधित हो सकती है। आइये हम परस्पर निर्भरता के तीन प्रकारों की जांच करें:

1. व्यवहार की परस्पर निर्भरता का संकेत इस तथ्य की ओर है कि एक सदस्य का व्यवहार दूसरे सदस्य के व्यवहार को उभारता है जो परिणामस्वरूप संपूर्ण समूह के कार्य करने को प्रभावित करता है।

2. परिणाम की परस्पर निर्भरता का संकेत इस तथ्य की ओर है कि प्रत्येक व्यक्ति की उपलब्धि (पुरस्कार की प्राप्ति) केवल उसी के व्यवहार का परिणाम नहीं है अपितु समूह के दूसरे सदस्यों के व्यवहार पर भी निर्भर करता है। उदाहरण के लिए आप सड़क पर चल रहे हैं आप तब तक सुरक्षित हैं जब तक कोई दूसरा व्यक्ति सामने या पीछे से नहीं टकरा जाता। इसका दूसरा अर्थ भाग्य की सहभागिता है, तात्पर्य किसी घटना का परिणाम समूह के प्रत्येक सदस्य को कम या अधिक प्रभावित करता है।

3. कार्य परस्पर निर्भरता का संकेत इस तथ्य की ओर है कि किसी लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए समूह के सदस्यों को अपनी क्रियाओं में सामंजस्य लाने की आवश्यकता होती है। उदाहरण के लिए, फुटबाल या क्रिकेट खेलने के लिए खेल में जीत के लिए विभिन्न खिलाड़ियों की क्रियाओं में सामंजस्य नितांत आवश्यक है। वे आज्ञा–पालन के सिद्धांत के आधार पर कार्य करते हैं।

पाठगत प्रश्न 21.1

1. एक समूह की परिभाषा कीजिए।
2. एक समूह की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता क्या है?

21.2 समूह कैसे कार्य करता है?

जब भी एक समूह बनता है या संगठित होता है वह कतिपय मानदण्डों के आधार पर कार्य करता है। समूह के सदस्य भी विभिन्न भूमिकायें अदा करते हैं। वे प्रस्थिति में भी भिन्न होते हैं। अंततः एक समूह उच्च कोटि से समन्वित हो सकता है और सदस्य गण संसक्ति में सहभागी हो सकते हैं या नहीं। अच्छा होगा यदि हम समूह के कार्यों के विभिन्न आयामों के बारे में स्पष्ट हो लें।

क. भूमिकायें : एक समूह में विभिन्न सदस्यों से विभिन्न भूमिकायें अदा करने की अपेक्षा होती है। आप को याद होगा कि अनेक समितियों में हम देखते हैं कि लोग अध्यक्ष, मंत्री, कोषाध्यक्ष आदि की भूमिका में रहते हैं। ये सभी विभिन्न भूमिकायें अदा करते हैं जो समूह के लक्ष्य प्राप्त करने में सहायक होते हैं।

ख. मानदण्ड : प्रत्येक समूह कतिपय नियमों के अनुसार कार्य करता है। ये नियम ही मानदण्ड बनाते हैं। वे सुस्पष्ट या अव्यक्त हो सकते हैं और समूह के सदस्यों के व्यवहार को चालित करते हैं। यह अपेक्षा की जाती है कि सदस्य मानदण्डों को स्वीकार करें।

ग. प्रस्थितिः विभिन्न भूमिकाओं के साथ विशेष प्रकार की दर्जा या समूह में स्थिति होती है। यह स्थिति दिये गये कार्य की प्रकति और निर्णय लेने को प्रभावित करने

वाली शक्ति से संबंधित होती है। इस प्रकार समूह में स्थिति भिन्नता दष्टिगोचर होती है।

21.3 समूह की प्रक्रियाओं की प्रकति

समूह की प्रकति जानने के बाद आप की रूचि यह जानने में होगी कि लोग समूह के सदस्य क्यों बनते हैं, समूहों का निर्माण कैसे होता है, और समूह के सदस्य के क्या अनुभव होते हैं। आइये हम इन प्रश्नों की विस्तत जाँच करें।

समूह का सदस्य बनने के कारण

लोग किसी समूह का सदस्य मुख्यतः इसलिए बनते हैं क्योंकि उन्हें उससे कुछ लाभ मिलता है या आवश्यकतायें संतुष्ट होती हैं। ये कभी–कभी कतिपय इच्छित लक्ष्यों को प्राप्त करने के अवसर प्रदान करते हैं। उदाहरण के लिए एक फुटबाल का खिलाड़ी फुटबाल टीम का सदस्य बनना पसंद करेगा क्योंकि यह उसे फुटबाल खेलने योग्य बनायेगा। एक समूह व्यक्ति के लिए कम से कम चार तरीके से सहयोग करता है :

1. लोग समूह का सदस्य इसलिए बनना चाहते हैं क्योंकि समूह उन लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहायता करते हैं जो कोई व्यक्तिगत रूप से नहीं प्राप्त कर सकता। उदाहरण के लिए आप किसी समूह के सदस्य इसलिए बनते हैं क्योंकि आपका मित्र या शिक्षक उस समूह का सदस्य है।
2. आप किसी समूह के सदस्य इसलिए बनते हैं क्योंकि आपको लगता है कि समूह के सदस्य संसाधनों (आर्थिक या अन्य) से युक्त हैं जो किसी समय आपकी भी मदद कर सकते हैं।
3. कभी–कभी लोग सुरक्षा की आवश्यकता पूरी करने के लिए किसी समूह का सदस्य बनते हैं। लोग सुरक्षा पा जाते हैं जब वे एक निश्चित समूह के सदस्य बन जाते हैं।
4. समूह अपने सदस्यों को एक सामाजिक सकारात्मक पहचान प्रदान करते हैं। लोग जो विभिन्न समूहों के सदस्य होते हैं उनमें अमुक समूह का सदस्य होने के नाते सकारात्मक अनुभूति और सकारात्मक आत्म प्रशंसा पैदा होती है।

सारांश में लोग समूह का सदस्य इसलिए बनते हैं क्योंकि समूह लक्ष्य प्राप्ति में सहयोग करते हैं, संसाधनयुक्त होते हैं, सुरक्षा की आवश्यकता की पूर्ति करते हैं और सामाजिक पहचान प्रदान करते हैं।

समूह अनुभवों का परिणामः संसक्ति

जब लोग काफी समय तक एक साथ रहते हैं तो बहुत से परिणाम सामने आते हैं। उदाहरण के लिए किसी समूह का सदस्य होना समूह के सदस्यों को संतोष देता है।

टिप्पणी

हम सभी भारतीय होने पर या किसी विशेष स्कूल में अध्ययन करने पर, या किसी विशेष संस्था में काम करने पर गर्व अनुभव करते हैं। इस प्रकार, संतोष की अनुभूति समूह को संसक्ति की ओर ले जाती है। एक संसक्त समूह में उच्च कोटि की एकात्मकता और सर्वसम्मति होती है। समूह की संरचना में शक्तियाँ होती हैं जो सदस्यों पर समूह में बने रहने के लिए कार्य करती है।

21.4 समूह निर्माण की अवस्थायें

समूह का निर्माण चार अवस्थाओं से गुजरता है। यह हैं :

क. दिशा दर्शन   ख. क्रिया विधि

ग. नियम–कानून   ग. नियमितीकरण

आइये हम समूह निर्माण के चरणों की महत्वपूर्ण विशेषताओं के बारे में जानकारी लें :

प्रथम अवस्थाः दिशा दर्शन

समूह निर्माण के प्रारंभिक चरण में संभावित सदस्य कुछ समय तक एक साथ काम करते रहने के लाभ–हानि को आँकने का प्रयास करते हैं। इस चरण पर लोग समूह के लक्ष्यों और अपनी संभावनाओं का आकलन करते हैं। वे अमुक समूह का सदस्य बनने के पहले अपने लाभ–हानि की अधिक चिंता करते हैं। लोग एक दूसरे की रूचियों, योग्यताओं और ज्ञान आदि के बारे में सवाल–जवाब करने में अधिक समय लगाते हैं।

दूसरा चरणः क्रिया विधि

जब कोई व्यक्ति यह तय कर लेता है कि एक विशिष्ट लक्ष्य प्राप्त करने के लिए समूह का निर्माण उसके हित में है, तो उसका ध्यान लक्ष्य प्राप्त करने के साधनों पर केंद्रित हो जाता है। अब तक सदस्य गण, समूह के लक्ष्य को प्राप्त करने में अपने योगदान, अन्य उपलब्ध संसाधनों और समूह के सदस्यों के मिलने वाले लाभों के बारे में स्पष्ट हो चुके होते हैं।

तीसरा चरणः नियम-कानून

लंबे समय तक परस्पर अंतःक्रिया करते–करते समूह के सदस्यों के सामाजिक आदान–प्रदान का स्वरूप उभर आता है। प्रत्येक की भूमिका और उसके कार्य भी स्पष्ट हो जाते हैं। इसी चरण पर एक सदस्य समूह का नेतत्व संभाल लेता है और समूह की क्रियाओं को रूप प्रदान करने में निर्णायक भूमिका अदा करने लगता है। अन्य सदस्य उस नेता से मार्गदर्शन प्राप्त करने लगते हैं।

चौथा चरणः नियमितीकरण

इस चरण पर मानदण्ड और भूमिकायें जो तीसरे चरण पर उभरकर आती हैं, नियमिती हो जाती हैं। समूह के सदस्य लिखित या मौखिक रूप से इन नियमों को स्वीकार कर लेते हैं और उनके पालन की अपनी इच्छा प्रकट करते हैं।

पाठगत प्रश्न 21.2

1. लोग समूह के सदस्य क्यों बनते हैं?
2. समूह निर्माण के चार चरणों का उल्लेख कीजिये।

21.5 समूह के प्रकार

सामान्य रूप से समूह दो प्रकार के होते हैं :

1. प्राथमिक समूह   2. गौण समूह

प्राथमिक समूह में विशेषकर निरंतर, निकट का और प्रत्यक्ष साहचर्य और सहयोग मिलता है। प्राथमिक समूह सबसे अच्छा उदाहरण परिवार है, जहाँ परस्पर निकटता और प्रत्यक्ष अंतःक्रिया देखी जा सकती है। प्राथमिक समूह के सदस्यों का समान भाग्य होता है। प्राथमिक समूह सभी सामाजिक संगठनों का केंद्रक होता है। ऐसे समूह बच्चों के व्यक्तित्व निर्माण में बहुत अधिक प्रभाव डालते हैं।

इसके विपरीत गौण समूह विशेष रूचि समूह होते हैं। उदाहरण के लिए इन समूहों की सदस्यता ऐच्छिक होती है। कोई किसी व्यावसायिक समूह का सदस्य हो सकता है जैसे डाक्टर, इंजीनियर, शिक्षक, कलाकार, आदि–आदि। इन समूहों के सदस्यों के मध्य अनिवार्य रूप से प्रत्यक्ष अंतःक्रिया नहीं होती फिर भी वे सीधे संपर्क में आ सकते हैं।

लोग अपनी प्रतिष्ठा, मैत्री आदि मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए गौण समूह का सदस्य बनते हैं। जब उनकी आवश्यकतायें पूरी हो जाती हैं तो वे गौण समूहों के बारे में अपनी धारणा बदल भी सकते हैं।

पाठगत प्रश्न 21.3

1. दो प्रकार के कौन से समूह होते हैं?
2. गौण समूह का कोई उदाहरण दीजिये।

21.6 व्यक्ति के व्यवहार पर समूह के प्रभाव

एक व्यक्ति के किसी समूह का सदस्य बनने पर उसका व्यवहार अनेक प्रकार से प्रभावित होता है। आइये हम कुछ महत्वपूर्ण प्रभावों को विस्तत रूप से जाँच लें :

निर्णय लेना

देखा गया है कि अकेला होने पर व्यक्ति निर्णय लेते समय कम जोखिम लेता है। दूसरी ओर एक समूह में रहने पर यह दिखाई पड़ता है कि व्यक्ति अधिक जोखिम लेने को

तत्पर हो जाता है। एक पूरा समूह व्यक्ति की अपेक्षा अधिक जोखिम लेता है। यह घटनाक्रम जोखिम बदलाव जाना जाता है।

प्रश्न यह उठता है कि व्यक्ति की अपेक्षा समूह अधिक जोखिम क्यों उठाता है? विश्वास किया जाता है कि उत्तरदायित्वों के विस्तार के कारण ऐसा होता है। असफलता की स्थिति में दूसरे लोग भी भागीदार होते हैं और हर व्यक्ति के प्रति आक्षेप को कर देता है और जोखिम के लिये समझाने–बुझाने वाली बात समाप्त हो जाती है। यदि समूह के अधिकांश सदस्य विचाराधीन समस्या की प्रतिक्रिया स्वरूप जोखिम को ही उचित मानते हैं तो अधिकांश कारण और औचित्य चर्चा में आने पर जोखिम का ही समर्थन करेंगे।

सामाजिक सुविधा

सामाजिक सुविधा उस प्रभाव की ओर इंगित करती है जो दूसरों की उपस्थिति से किसी व्यक्ति के कार्यनिष्पादन पर पड़ता है। अपने व्यवहार का स्मरण करें। जब आप कोई सरल कार्य संपादित कर रहे हैं या कोई ऐसी चीज जिसे आप अच्छी तरह जानते हैं, ऐसे में एक संभावना होती है कि समूह के दूसरे सदस्य जैसे माता–पिता या शिक्षक आपके कार्य का मूल्यांकन करेंगे और आप अपना सर्वोत्तम कार्य निष्पादन दिखाने का प्रयास करते हैं। दूसरी ओर, ऐसी सजगता आपके कार्य निष्पादन की योग्यता में व्यवधान डालती है जबकि कार्य जटिल है और आपका निष्पादन कम हो जाता है।

पाठगत प्रश्न 21.4

1. एक समूह व्यक्ति की अपेक्षा अधिक जोखिम क्यों लेता है?
2. सामाजिक सुविधा का क्या प्रभाव होता है।

आपने क्या सीखा

- एक लक्ष्य के साथ कुछ समान विशेषतायें रखने वाले व्यक्ति एक समूह का निर्माण करते हैं।
- एक समूह बड़ी जनसंख्या के अंदर उपजनसंख्या है जिससे व्यक्तियों को उसमें और उसका होने की पहचान मिल सकती है।
- परस्पर निर्भरता एक समूह की महत्वपूर्ण विशेषता है। तात्पर्य है कि एक सदस्य का व्यवहार दूसरे सदस्य के व्यवहार को उभारता है, परिणामस्वरूप समूह को अमुक तरीके से कार्य करने को प्रभावित करता है।
- लोग विभिन्न कारणों से समूह के सदस्य बनते हैं क्योंकि समूह लाभदायक है और समूह के सदस्य संसाधनों और उत्तरदायित्वों वाले होते हैं जिनमें सहभागिता मिल सकती है।
- संसिक्तता लोगों के विश्वास की ओर इंगित करती है कि किसी एक समूह का सदस्य होने के नाते वह पुरस्कृत होगा।

- समूह का निर्माण चार चरणों पर होता है वे हैं : 1. दिशादर्शन, 2. क्रिया विधि, 3. नियम–कानून, 4. नियमितीकरण।
- समूह दो प्रकार के होते हैं : प्राथमिक और गौण।
- समूह निर्माण व्यक्ति के व्यवहार को दो प्रकार से प्रभावित करता है : 1. निर्णय लेना, 2. कार्य संपादन।

पाठांत अभ्यास

1. एक समूह को परिभाषित कीजिये।
2. एक समूह की विशेषताओं को सूचीबद्ध कीजिये।
3. समूह के विकास के चार चरणों का वर्णन कीजिये।
4. किसी समूह का अंग होना व्यक्ति के व्यवहार को कैसे प्रभावित करता है।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

21.1 1. जब दो या अधिक लोग समान लक्ष्य की प्राप्ति के लिए अंतःक्रिया करते हैं तो एक समूह अस्तित्व में आता है।

2. परस्पर निर्भरता।

21.2

1. लोग समूह का सदस्य बनते हैं क्योंकि समूह :

लक्ष्य प्राप्ति में सहायता करता है: ● संसाधनयुक्त होता है

● सुरक्षा की आवश्यकता की पूर्ति करता है ● सामाजिक पहचान प्रदान करता है।

2. दिशा दर्शन, क्रिया विधि, नियम–कानून, नियमितीकरण

21.3

1. प्राथमिक और गौण समूह   2. शिक्षकों की समिति

21.4

1. क्योंकि असफलता की स्थिति में दूसरे लोग भी आक्षेप में भागीदार होते हैं।
2. जब एक व्यक्ति के कार्य निष्पादन में दूसरे लोगों के कारण सुधार आता है तो इसे सामाजिक सुविधा कहा जाता है।

पाठांत अभ्यास के संकेत

1. संदर्भ 21.1   2. संदर्भ 21.1

3. संदर्भ 21.4   4. संदर्भ 21.6